विषय सूची

अंत में

सिया राम अनुरागी

भक्त हनुमान

द्वारा माता सीता की खोज के प्रसंग

का मार्मिक काव्यमय प्रस्तुतीकरण

डॉ. गिरीश चन्द्र अग्रवाल

Published by:

Sahityapedia Publishing

Noida, India – 201301

www.sahityapedia.com

Contact - +91-9618066119, publish@sahityapedia.com

First Edition - 2023

ISBN - 978-93-91470-76-0

अनुक्रमणिका

समर्पण

|| कण - कण में व्याप्त ||

|| जन - जन के नाथ ||

परमपिता

परमेश्वर

के

पावन चरणों में

सादर

समर्पित

|| विनय प्रभु चरणों में ||

धर्म वही जो धारण करते, परम पिता का रख कर ज्ञान।

सकल विश्व परिवार मानकर, करलें मिलकर उसका ध्यान॥

वही पिता माता है मालिक, सकल प्राणियों का रखवाला।

राम वही हनुमान वही, सबको वो रखता है मतवाला॥

प्रभु को चाहो आप जानना, भक्त ह्रदय की रख लो आन।

उसकी सेवा और आरती, मन में इनका निज हित ध्यान॥

वह अनंत है सबका रक्षक, सेवक को देता सम्मान।

जीना साथ-साथ ही रहना, नहीं कही है कुछ अपमान॥

आराधना प्रभु की होगी, भक्त भावना के व्यापारी।

राग द्वेष सब दूर करें अब, अनुष्ठान की है बारी॥

धर्म ग्रंथ ये सदा बताते, भक्ति साधना की गाथायें।

कठिन तपस्या से तप कर लो, सदा जगाते आशायें॥

भक्ति मार्ग है कठिन विदित है, चलने की अब इसकी आन।

विनय सहित आवाहन केसरी, बनो सहायक सेवक जान॥

हुलसी के तुलसी पथगामी, मानस के आराधक मान।

सुंदर ही सुंदर काण्ड लिखा, प्रभु दो निज वाणी का वरदान॥

करूँ विनय कर जोड़ विधाता, बुद्धि सदा हो तुममें लीन।

हो प्रसन्न पूरी हो गाथा, वर मांगे प्रभु से ये दीन॥

ऋषिवर बाल्मीकि की रचना, तुलसी मानस रस की खान।

हनुमान सेवक रघुवर के, हो कर मुदित सहज दो ज्ञान॥

एक द्रवित प्रभु भक्त की लेखनी से

सिया राम अनुरागी भक्त हनुमान द्वारा माता सीता की खोज के प्रसंग का मार्मिक काव्यमय प्रस्तुतीकरण

किंचित प्राणी द्वारा सादर समर्पित ये रचना मेरे मानस ह्रदय में हिल्लोर मार रही मानवीय अनुभूतियों का अत्यंत आदर एवं सम्मान के साथ समर्पण है। प्रार्थी को ये स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं है कि ह्रदय की संवेदनाओं वाणी के कैनवास पर समस्त संवेदनशील धार्मिक भावनाओं से प्रेरित सम्मानित प्रबुद्ध पाठक गण की अदालत में दीनता के साथ प्रस्तुत किया है।

मान्यवर - भौतिक अधाधुंद बढ़ती आंधी में मानव मात्र का बड़े बहुमत में वर्ग धन-धान्य, रुपया, रूबल, यूरो, व डॉलर आदि को अति प्रभावशाली गरिमा युक्त भगवन मान चुका है। इसका दुखित पहलू ये हुआ है कि इन झंझावात में मानवीय भावनायें व संवेदनायें तार-तार हो चुकी हैं। इसका निपट नंगा प्रमाण है आये दिन समाचार पत्रों, दूरदर्शन में बहुतायत में समाचार जिसमें भौतिकता की कठपुतली हो रूपये आदि की अपनी अंधी भक्ति को प्रमाणित करने के लिए खून के संबंधों को तार-तार कर दिया है।

मेरे अति प्रिय साथियो, इस अंधे मार-काट के दौड़ में विधाता की अनमोल संतति को बचाने का केवल एक ही विकल्प रह जाता है कि धर्म का सार्वभौमिक आदर्श उद्बोधन -सम्पूर्ण विश्व एक अखंड परिवार- का पालन व अनुपालन पूर्ण निष्ठा एवं मनोयोग से किया जाये।

भक्त गण, हम सब यह बिना लागलपेट के मानते हैं कि सुख पैसे द्वारा खरीदी गयी विलासताओं व उनके बड़े खजाने (बैंक बैलेंस, गड़ा कब्जाया धन) से उतना नहीं जितना कि आत्मिक प्रेम अनुभूतियों साहचर्य से प्राप्त करना है।

पुनः सानुरोध आवेदन - हम भौतिक अगाध साधनों को केवल और केवल तुच्छ सेवक ही मानें तथा सार्वभौमिक सर्वोच्च आसान पर आध्यात्म द्वारा परिभाषित संवेदनाओं को ह्रदय की गहराईयों के साथ प्रतिष्ठित करें। मेरा तो यह निश्चित मत है कि केवल और केवल यही अकेला मार्ग है जिसमें परम पिता परमेश्वर की अमूल्य संतति की रक्षा व संरक्षण किया जा सकता है।

मेरे प्यारे पाठक गण - आपसे कर जोड़ ये सानुरोध निवेदन है कि प्रस्तुत काव्यमय प्रस्तुति का रसास्वादन इसी परिपेक्ष में किया जाये। ये किंचित आपको विश्वास दिलाता है की मानवीय विकास और उसके सर्वोच्च पद प्राप्त करने का यही अकेला मार्ग है और अनंत काल तक रहेगा।

विषय वस्तु तो बहुत सामान्य और ह्रदयग्राही है। आप इसको साफ़ सुथरी चेतना के परिवेश में पढ़ें मनन करें और अपने अचेतन आत्मचिंतन में स्थान दें।

अंत में अनिवार्य हो जाता इस गुरुतर कार्य पूरा करने में प्राप्त सहयोग का। 78 वर्ष की आयु में यह गुरुतर कार्य इसलिये ही पूरा हो पाया कि मुझको अपने परिवार धर्म पत्नी उमा, सुपुत्र शेखर, पुत्रवधु काजल व पौत्र मानव और पौत्री गौरी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। मेरी पुत्री डॉ. सुरभि - रोहित व सलोनी - सिद्धार्थ भी हर पल मार्ग दर्शक व सहयोगी हुए।

मुख्य मुकाम आता है इस श्रृंखला में हमारे बड़े बेटे सौरभ - परम प्रिय ममता व क्यारी के पुष्प आदित्य व अर्जुन का जिनका सहयोग हरेक क्षेत्र में संपूर्ण व आदर्शात्मक रहा जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है।

पुनः सबको आभार इस सहयोग के साथ कि इस कृति का स स्वर गान किया जाये भक्ति व उत्साह के साथ आपकी अदालत में दाखिल बड़े सम्मान व स्नेह के साथ प्रस्तुत

|| ओम शांति - ओम शांति ||

- डॉ. गिरीश चन्द्र अग्रवाल

प्राक्कथन

जगत जननी सीता को दुर्मात्मा रावण द्वारा बलात् ले जाने के बाद विरह व्याकुल श्री राम लघु भ्राता लक्ष्मण को किष्किंधा पवन तनय हनुमान अपने कंधे पर बैठाकर लाये। राजा वानरराज सुग्रीव उनके सहायक हुए। वानर, भालू, यूथ सेनायें माँ सीता की खोज हेतु समुद्र तट पर एकत्रित हुईं।

अब प्रश्न था सागर पार कर लंका प्रवेश का जहाँ जनक नंदिनी सीता के होने की संभावना थी। युवराज अंगद जाने को उद्यत थे लेकिन वापिस आने में सशंकित थे। वयोवृद्ध मंत्री जामवंत को विश्वास था कि केसरी नंदन हनुमान इस कार्य के लिए सक्षम थे। उन्होंने हनुमान के बल पौरुष की प्रशंसा करते हुए इस कार्य को करने के लिए प्रेरित व उत्साहित किया।

इसके आगे की कथा प्रस्तुत काव्य की संरचना में निहित है। सादर आपकी सेवा को अर्पित इस आशय से कि आप इसका रसास्वांदन करें, सुनें, मनन करें प्रभु का स्मरण करते हुए।

खंड प्रथम (1)

केसरी नंदन: यात्रा सागर की
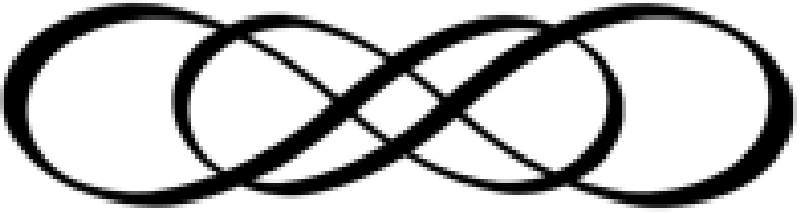
1

जब जामवंत ने पौरुष को बतलाया।

हनुमंत ह्रदय में जोश नया भर आया॥

पुलकित थे केसरी शक्ति नयी सी जागी।

हुए सभी को नत मस्तक अनुरागी॥

2

ऊर्जा का खुद ही उनमें संचार हुआ।

पग स्वयं बढे खुद ही मंजिल को पाने को॥

उच्च शिखर पर्वत पर पग धारण करके।

पुलकित हो मारी छलांग उड़ जाने को॥

3

ह्रदय में धारण सीता हनुमान चले।

नीचे सागर अंबर ऊपर नभ के पथ पर॥

मुश्किल कोई भी नहीं उन्हें अब लगती थी।

रघुवर की महिमा थी अपार उनके रब पर॥

4

था एक अटल विश्वास बना अब साथी था।

जननी सीता का पता लगाकर आना है॥

सौगंध प्रभु की खुद ने मन में ठानी थी।

संकट कोई भी हो मंजिल को पाना है॥

5

गति उनकी अब पल-पल में बढ़ती जाती।

पौरुष उनमें अब नयी चेतना भरता था॥

चिंता ना थी उनको अब किसी बबंडर की।

प्रभु राम भक्ति की आस नहीं वह डरता था॥

6

मैनाक स्वयं नत मस्तक सेवा को आतुर।

लै तात यहाँ विश्राम शक्ति संचित करले॥

रघुपति राघव की सेवा ही मेरा अभीष्ट।

हो साथ-साथ पल भ्रात हृदय गर्भित करले॥

7

विंहस पवनसुत ने ये अभिनंदन माना।

पग से पर्वत को छुआ बड़े हनुमान चले॥

अपना माना उसका भी सम्मान किया।

था ज्ञान उन्हें निज दिल में प्रभु की जोत जले॥

8

विश्राम नहीं करना था प्रभु के काम बिना।

यही भाव केसरी में सदा महकता था॥

राम नाम सुमिरन कर वे उत्साही थे।

सबका हित विश्वास प्रफुल्ल चहकता था॥

9

बाधा आई वहां विकट सुरसा पथ रोका।

कर अट्टहास गरजी रुक जा भोजन मेरा॥

हनुमान तनिक न घबराये बोले मीठे स्वर।

नहीं, अभी प्रभु कार्य बाद संयोजन तेरा॥

10

प्रभु कार्य सिया का पता लगा कर आऊंगा।

माँ निश्चय ही मुझको तुम बस फिर खा लेना॥

इसमें लेश मात्र ही तुम अब शक न करो।

प्रभु राम शपथ आहार स्वयं ही पा लेना॥

11

सुरसा भभकी धर रूप अधिक खूंखार हुई।

झपटी पागल सी राम भक्त के भक्षण को॥

पाक केसरी को न क्रोध थोड़ा आया।

झट खुद आकार बढ़ाया निज के रक्षण को॥

12

सुरसा मायावी कपि की साधना अधिक थी।

वह कामी पापी पर आभा उनकी थी वंदित॥

दुष्ट आततायी सुरसा का मुख बढ़ता था।

हनुमत कद को दुगना कर वह बस थी चिंतित॥

13

पाताल सरीखा मुख खोला हनु भक्षण को।

रघुपति सेवक अति सूक्ष्म बने निज रक्षण को॥

सुरसा की इच्छा पूरी की बाहर आये।

सीस झुका आज्ञा ली फिर आगे धाये॥

14

नहीं निरापद था अब भी सागर पथ हनु का।

निसिचिरी छिपी थी यहाँ कपि का मद हरती॥

आकाश मार्ग जो जीव उड़े उनकी परछायीं।

झपट तुरत भक्षण करती थी दया न करती॥

15

हनुमत को था ज्ञान समझते थे उसका फन।

तुरत उदधि में कूद दबा ली उसकी गर्दन॥

पकड़ बहुत घातक थी सांस रही न बाकी।

पल में ही कपि नाश किया दुष्टा का मर्दन॥

16

बड़े शांत थे प्रभु अर्चन में चित था डूबा।

भक्ति सरित ईंधन उनमें नित-नित गति भरता॥

जय राम-राम का नाद वातायन सुर्भित करता।

दुंदुभि बजा देवता प्रकट कष्टों को हरता॥

17

अथाह भक्ति प्रभु राम सदा बाधा सब हरती।

दुरूह यात्रा सागर की मंगल मय करती॥

सीख यही परमारथ पर विश्वास सदा हो।

भाग्य लक्ष्मी स्वयं प्रकट संकट मिल हरती॥

खंड द्वितीय (2)

लंका में हनुमान
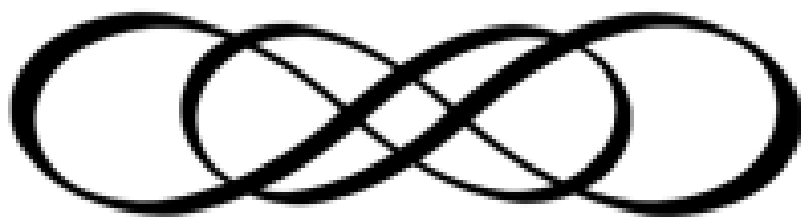
18

हनुमंता ने पार किया खुद भव सागर को।

झुककर सादर माथा नाया निज नागर को॥

लंका पथ पर अवलोकित की अनुपम शोभा।

वन उपवन के मधुप पक्षियों का मन लोभा॥

19

थे मंत्र मुग्ध हनुमान निरख बन उपवन शोभा।

नाना तरू फल फूल अलख निज मन मोहा॥

स्वतः प्रेरणा उठी चढ़े खुद आप शिखर पर।

निर्भय तन मन पुलकित देखा सहज निखर कर॥

20

थे निडर भक्त हनुमान काल से न घबराते।

कार्य बना आराध्य स्वतः खुद को समझाते॥

दूर-दूर तक दुर्ग कोट अनगिनित बने थे।

भव्य रूप अप्रतिम प्रकाश नंदित से लगे थे॥

21

कोटि विशाल प्रसाद बने रक्षक थे प्रेहरी।

स्वर्ग सरिस शोभा थी अनुपम हर्षे केसरी॥

हथियार सुसज्जित सैनिक थे रक्षा में रत थे।

दुर्भेद्य दुर्ग हनुमान निरख फिर भी न नत थे॥

22

इन विषम परिस्थियों में कपि ने कुछ मनन किया।

प्रथम कार्य पूरा होगा फिर ही जाने का जतन किया॥

योग विद्या में प्रवर ने रूप छोटा कर लिया।

मात सीता खोज का ये प्रण स्वयम् मन में किया॥

23

दुर्योग बनी लंकनी खड़ी पथ को था रोका।

झपटी कपि को आहार मान छोड़ा न मौका॥

कपिवर थे सावधान पलटे दुष्टा पर मुष्ठ प्रहार किया।

तुरत पड़ी आतुर धरती पर रक्त वमन चिंघाड़ किया॥

24

कुछ पल रही विकल उठकर सादर कपि को सम्मान दिया।

कपिवर में आज अनुग्रहित हूं बृह्मा का वर ही पूर्ण किया॥

उनका ही कथन हुआ पूरा हनु का प्रहार आधार बना।

निसिचर वध का पे शुभारंभ लंका का नव आचार जना॥

25

हे राम भक्त अतुलित योद्धा हनुमान तुम्हारा अभिनंदन।

प्रभु की आभारी हूं प्रियवर भेजा मेरा ये आनंदन॥

रघुपति राघव का कार्य प्रथम पूरा कर लौटें प्रिय स्वामी।

मेरा वंदन भी अभिनंदन कर क्षमा समझ मुझको कामी॥

26

ली बिदा लंकनी से रघुपति के दास चले लंका पथ पर।

था राम नाम का पाठ सतत केसरी के खुद निज की हट पर॥

छोटा ही बिलकुल रूप धरा विचरण करते माया नगरी में।

मंदिर थे और प्रसाद बने योद्धा रक्षा करते पगड़ी में॥

27

आतुर कपि के व्याकुल नैना सीते दर्शन को व्याकुल थे।

राजसी महल रावण का देखा हनुमत न अब आतुर थे॥

शाही था सब ठाट बाट शोभा भी थी उसकी अपार।

सुंदर बालायें अति मोहक कपि थे बिलकुल ही निराकार॥

28

सीता जननी को न पाकर हनुमान बढ़े आगे पथ पर।

मंदिर था प्रभु का देख वहाँ हर्षित थे हनुमत निज हट पर॥

तुलसी बिरवा महक रहा हरि ध्वजा वहां चहकती थी।

निसिचर की बस्ती में समिधा की महक वहां महकती थी॥

29

राम भक्त हनुमान खडे हर्षित न वो अब शंकित थे।

प्रभु भक्त यहाँ कोई रहता यह भाव स्वयं ही अंकित थे॥

राम-राम का स्वर गूंजा हनुमान स्वयं आनंदित थे।

प्रत्युत्तर में श्री राम कहा अंतर मन में वे वंदित थे॥

30

प्रभु भक्त भेष में साधू के यजमान तुरत बाहर आये।

दो भक्त मिले सम्मिलन हुआ दिल से दिल के वर्तन भाये॥

पूंछी कुशल क्षेम हनुमत से बोले कृपा करी क्यों तात।

विनय सहित कर जोड़ कही कपि ने प्रभु कारज की बात॥

31

दस्युराज रावण का छोटा भ्रात यही परिचय अपना।

किंचित का नाम निभीषण है निसिचर हूँ विधि का ये सपना॥

दुर्भाग्य यही तामस तन है मन पर पातक का साया है।

हैं भाग्यवान हनुमान आप ये दास कलंकित काया है॥

32

मैं आज बड़ा बड़भागी हूं जब दरस तुम्हारा हो पाया।

अब यह भी ज्ञात हुआ मुझको सुख दुख सब उसकी ही माया॥

हनुमंत बड़े ही हर्षित थे प्रभु ने भेजा अनुचर अपना।

हे नाथ राम जी सबके हैं न मानें अब उसको सपना॥

33

देव कष्ट भंजक रघुवर रत श्रीवर आप विभीषण हैं।

कपि मानव से हूँ हेय सदा चंचल प्रिय खुद आभूषण हैं॥

गांव-गांव में कहें कहावत लिया अगर जो नाम हमारा।

भूखे ही चाहें रह जाओ नही मिलेगा कहीं अहारा॥

34

प्रभु भक्त स्वयम् आनंदित थे लीला उनकी महिमा अपार।

चक्र समय का गति से बीता रही न चिंता आर पार॥

कहा विभीषण ने हनुमत माँ का मैं पता बताता हूँ।

यह कार्य यहां अब दोनों का बस पटल स्वयम् ही हटाता हूँ॥

35

वाटिका दशानन में सीते पादप अशोक तल बसती हैं।

क्रस बदन तपित दुख में आतुर वो राम-राम ही जपती हैं॥

साधन और सावधानी हनुमत को यों ही बतलाया।

कपि थे अब आतुर अपार ले विदा चला वो हर्षाया॥

खंड तृतीय (3)

हनुमान का जानकी मिलन
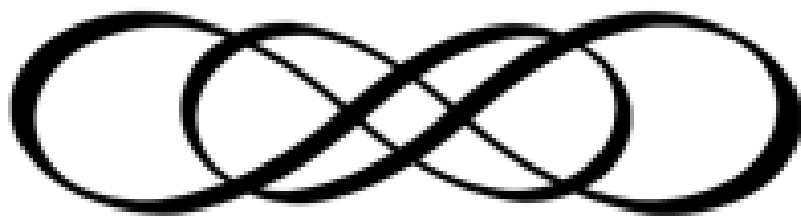
36

पद तीव्र बढ़े अब केसरी के मंजिल अब थी उनको ज्ञात।

शोर शराबा सब कम था अब थी बस जगमग सी रात॥

दृष्टि पड़ी रावण की फुलवारी पर राहत खुद आयी।

वट अशोक था मध्य वहां हनुमत को माँ की छवि पायी॥

37

तेज पुंज से दीप्त शिला पर शोभित कपि ने सीता जाना।

कृस तन थीं सीस जटा गंदली विरही रघु की वनिता माना॥

पुलकित था तन मन केसरी का अंतर्मन से सम्मान दिया।

मेरे प्रभु की महिमा अपार आपद का स्वयम् निदान किया॥

38

जननी थी शांत स्वयम् दिखती ओठों से प्रभु को जपती थी।

नेत्र कमल थे सुप्त हृदय पथ पर रब को वो रखती थी॥

वृक्षों की झुरमुट में हनुमत माँ सीता को अलपक लखते।

अनगनित निसिचरी थीं सचेत केसरी अब मिलने को तरसे॥

39

तभी अचानक कोलाहल था बढ़ा दशानन खुद आया।

असुर रूप की बालाओं का साथ वहां उसने पाया॥

वह दुष्ट बहुत ही कपटी था माँ सीता उसकी कमजोरी।

वह कुटिल हृदय से फुसलाता धमकाता बन जा हमजोली॥

40

सीमायें तोड़ी मानवता की असुर यही विनती करता।

बहु पत्नी हूँ पटरानी मंदोदरी तज तुम पर मरता॥

वचन आज देता सबकी महारानी तुम ही बन जाना।

सकल विश्व का सुख वैभव निश्चित तुम ही सब यों पाना॥

41

काम वासना से पीड़ित था अति क्रोधित सीता भभकी।

दुष्ट महा पापी निर्लज माँ काली की जिह्वा लपकी॥

माना में कैद तुम्हारी हूं रघु गरिमा का न है भान तुझे।

कुल का विनाश निश्चित होगा रे दुष्ट मान अब काल मुझे॥

42

सीता जहरीले बोल सुने रावण ने क्रोध विकट पाया।

आपा खो कर पागल सा हो सीता का वध करने आया॥

रोका उसको उसके सहचर ने नीति धर्म का पाठ पढ़ाया।

तनिक सोच गरजा वो रावण निसिचरियों को यों भड़काया॥

43

कष्ट बहुत तुम दो सीते को मति इसकी विधि ने हारी।

निसिचरियों से बोला रावण दुष्ट बहुत न बेचारी॥

दिवस तीस सोचो तुम सीते लो तुम मेरी ये सौगात।

यही प्रखर अनुशासन मेरा नहीं अगर वध की ही बात॥

44

प्रस्थान किया रावण ने खुद ही निज प्रसाद रूपसि के साथ।

क्रोधित थीं अब सभी निसिचरी आज्ञा थी रावण की पास॥

झपटी क्रस सीता पर मिल कर उन्हें सताने की थी आस।

निश्चिंत ध्यान मग्न थी सीते दिल में थी दर्शन की रास॥

45

गूँजा स्वर "रुक जा" सुन कर दुर्दांत प्रखर प्रहार थमा।

त्रिजटा था नाम राक्षसी का प्रभु भक्ति रीत में हृदय रमा॥

बोली त्रिजटा सपना सुनलो मैंने देखा गत रात्रि वहां।

हित चाहो तो लो क्षमा स्वयम् माँ सीते से तत्काल यहाँ॥

46

सपना वो बड़ा भयानक था वानर सेना का धावा था।

किटकिटा रहे चिंघाड़ रहे लंका सेना को मारा था॥

यही नहीं था अंत दशानन रावण के सर खंडित थे।

मारो काटो का क्रंदन था सूरवीर सब दंडित थे॥

47

मारकाट अब थी समाप्त रघुवर का डंका बजता था।

रोते सब विलाप करते थे भक्त विभीषण हर्षित था॥

अरे सुनो रघुवर सेना के साथ तुरत सीता को लाये।

माना सपना है मत भूलो विधि का लिखा न अब टल पाये॥

48

निसिचरी सभी, भय आतुर भी निज त्रुटि का उनको भान हुआ।

जगत रक्षणी माँ सीते के बल महिमा का ज्ञान हुआ॥

चरण पड़ी उनके, “माँ क्षमा करो” कह कर दुख दर्शाया।

मान दिया सम्मान दिया तन मन से ममता वर्षाया॥

49

रघुवीर प्रिया सीता थी आहत दुष्ट दशानन की धमकी से।

एक माह का ही जीवन था कामी खल गीदड़ भभकी से॥

दुखित हृदय त्रिजिटा से बोली काल घात अब विधि का सपना।

प्रभु वियोग ये नग्न प्रदर्शन कर लूं होम प्राण में अपना॥

50

दुसह वेदना से पीड़ित सीता का दिल तिल-तिल रोता था।

मार्ग नहीं था कोई दिखता मौत ताण्डव बल खोता था॥

अब निदान न कोई संभव काष्ट जोड़ निज चिता बनायी।

करें विनय कर जोड़े सीता माँ इसमें दो आग लगायी॥

51

माँ सीता का दारूण विलाप सुन त्रिजिटा मन से दुखी हुई।

प्रभु की महिमा से बनी सहायक बिखरी पर फिर मुदित हुई॥

पुत्री वत प्रेम लुटाती थी निज ज्ञान तिमिर मन का धोया।

प्रभुलीला का करती बखान सुख के दिन का सपना बोया॥

52

त्रिजटा थी दुखित विकल सीता साहस भी कुछ राहत देती।

संभव है रावण का विनाश प्रभु राम विजय का व्रत लेती॥।

माँ सीता में उठती ज्वाला को ममता सहित निदान दिया।

राम-राम का सुमरन करके विदा स्वयम् प्रस्थान किया॥

53

एकांत देख माँ सीता को हनुमत वट पर स्थान लिया।

जननी का भटका अंतर्मन जीने की आशा त्याग किया॥

परम पिता से विनती करती प्रभु दो अग्नि शिखा का दान।

थी द्रवित जानकी फूट पड़ी लो विधि अब मेरी ही जान॥

54

सीता का था बस दुख अपार जीवन का मोह नहीं था अब।

विधि था प्रतिकूल थी हतभागी था विदित नहीं जाना है कब॥

देखा निहार तरूवर अशोक मांगी यम से मरने की आस।

पवन महकती प्रमुदित करती हा काश नहीं पूरी अभिलाष॥

55

दुख का सागर था अब उफान पर नहीं अलख थी उसके पास।

आंचल फैला कर अति आतुर भीख मांगती थी कुछ आस॥

तुम अशोक न दुख के साथी शपथ तुम्हें दुखिया की चाह।

अग्नि पुंज बन वर्षो मुझ पर छीनों इस जीवन की राह॥

56

हनुमत अलपक थे दर्शक थे माँ सीता दुख में रोते थे।

सोचा कष्ट स्वयम् हरलूं रघु यादों में मति खोते थे॥

आंचल वो दुखित पसारे थीं न भीख मौत ने तरसाया।

केसरी ने सोचा अंतर्मन मुद्रिका तुरंत ही टपकाया॥

57

मुद्रिका मनोहर स्वर्ण जटित पा सिय हर्षित आनंदित थीं।

प्रिय राम सुनहरा नाम पढ़ा प्रभु के चरणो में वदित थीं॥

दुख सब भूली मन पुलकित था महिमा अपार प्रभु की मानी।

आखों में साथ अचंभा था देव दूत मन में जानी॥

58

हनुमत सोचा यह समय उचित प्रभु लीला का गुणगान किया।

लीला उसकी महिमा अपार सब संतति को वरदान दिया॥

बोली सीता अति उत्सुख हूं हों नाथ प्रकट न लाचारी।

केसरी ने उचित समय जाना पहुंचे अब थी उनकी बारी॥

59

झुक प्रणाम सम्मान दिया माना खुद को जननी का दास।

प्रभु राम भक्त में दूत उन्हीं का भेजा सुध लेने की आस॥

मेरे प्रभु की महिमा अपार वे जननी के हैं सब लायक।

सबके रक्षक हितकारी हैं मानो माँ वो सबके नायक॥

60

हनुमत से रघुवर महिमा सुन कर सीता ने खुद अनुदित माना।

दिल का प्रियतम रघु में डूबा उनका गुणगान सगुन जाना॥

देखा ममता से कपिवर को हर्षित थी पुलकावली भारी।

पूंछी कुशल कृपाल, अनुज की चिंता थी न सब हारी॥

61

हनुमत बोले माँ दुखी न हो प्रभु भ्राता सहित कुशल से हैं।

हाँ याद आपकी में खोये तन मन माँ खोज जुगत में हैं॥

वानर सेना के साथ प्रभु सुग्रीव सहज सेवक उनके।

माँ वे हर पल हैं चुस्त व्यस्त बृमांण्ड खोजते सब मिलके॥

62

बांध टूटता धीरज का प्रभु की यादो में डूब गयी।

दिल विचलित था मन था पागल दर्शन की डोरी टूट गयी॥

कपि जननी का दुख हरने को प्रभु संदेश दिया उनको।

रघु व्याकुल हैं वे अति पीड़ित रोके हैं बस विरही मन को॥

63

संदेशा प्रभु राम कहा सीते तुम बिन जग सूना लगता है।

सुख-दुख न मालुम क्या होते दिन रात सहज न कटता है॥

प्रेम तत्व महिमा अपार जाना प्रिये अब तुमको खोकर।

धन धान्य प्रतिष्ठा राजतिलक है सब फीके जाना रोकर॥

64

सीते प्रिये ध्यान सदा रखना यह मिलन विरह मानव मति हैं।

दिन के साथ रात्रि का बंधन उजले प्रकाश अंधियारी गति है॥

स्वर्ग नरक विधि का विधान है यम की बेड़ी निश्चित जान।

एक रचेयता वो ही रक्षक महिमा उसकी प्रियवर मान॥

65

प्रभु संदेश सुना सीता ने तन मन पुलकित हर्षित गात।

आँखें निज प्रीतम को तरसी छवि अंकित न होती बात॥

कपिवर यह असह वेदना है प्रभु दर्शन ही निदान इसका।

छूटा आँगन उपवन प्रीतम का सुख का सपना न बस का॥

66

सीता थी मगन प्रेम प्रीतम के तन मन की सुधि सब भूली।

प्रभु राम बिना संभव जीवन न उनकी यादों में झूली॥

हनुमत बोले चिंतित मत हो माँ बीती अब विपदा की रात।

है समय नहीं अब माँ बाकी प्रभु राम मिलन की है बस बात॥

67

ये विलंब, नहीं वो दोषी हैं, हो कहाँ, नहीं था बिलकुल ज्ञात।

स्वीकार मात्र थी खोज आपकी नहीं दूसरी थी कुछ बात॥

माँ तुम अब ये विश्वास करो सक्षम तुमको ले जाने को।

आज्ञा प्रभु की है सिर माथे सुध जननी की बस लाने को॥

68

न दिवस बहुत अब बीतेंगे रघुवर सेना संग आयेंगे।

निसिचर सेना मिट जायेगी प्रभु राम तुम्हें फिर पायेंगे॥

माता ये शपथ राम की है पापी यों बच न पायेंगे।

वे जघन पाप फल भोगेंगें दुर्दांत नरक को जायेंगे॥

69

माँ सीते कपि की काया लख उन पर विश्वास न अपना था।

निसिचर सेना बलशाली है उनका विनाश बस सपना था॥

हनुमत ने माँ का शक समझा लघु रूप पर्वताकार किया।

कपि की क्षमता का भान हुआ मन ही मन खुद स्वीकार किया॥

70

सागर कौतुक में पार किया साधारण उनको अब न माना।

निर्भीक निडर, डरपोक न था प्रभु सेवक न कायर जाना॥

पुलकित थी माँ अब सीने में कपि को अति प्रिय खुद ही माना।

सज्जन हितकारी दुख भंजक प्रभु सेवा में नित रत जाना॥

71

माँ सीते का वरद हस्त पाकर हनुमत की छटा निराली थी।

डर था न कुछ चिंता बाकी प्रभु कार्य सफल ही दिवाली थी॥

थी विदा घड़ी अब पास जान माँ सीस झुका सादर बोला।

माँ का दर्शन वैभव पाया मन प्रभु दर्शन में ही डोला॥

72

माँ से ले विदा मुदित हनु थे मन में कुछ भाव प्रकट जागा था।

श्रम से थी शक्ति क्षीर्ण हुई अब उदर मधुर फल माँगा था॥

फूटे स्वर "माँ में भूखा हूँ" इस पर न कुछ बस अब मेरा |

मैं मधुर सलोने फल खालूं माँ हो फिर यदि आज्ञा तेरा॥

73

हनु के प्रेम पगे बचनों से हट भोजन की माँ को भायी।

सुभट्ट भट थे चौकने सब, फल तोड़े न कोई राही॥

सीते को भय निर्मूल लगा हनुमत निश्चित बलशाली थे।

माँ की आज्ञा आवश्यक की भूखे थे नहीं बबाली थे॥

74

सीता माँ प्रेम सहित बोली सुत भूख मिटा मीठे फल खा।

प्रभु राम भक्ति रक्षक तेरी उनकी जय हो सचेत अब जा॥

वरदान पुत्र ये मेरा है प्रभु रक्षक हैं बलशाली हैं।

प्रहरी निसिचर भिनगे से हैं दावानल कपि की लाली है॥

खंड चतुर्थ (4)

लंका दहन
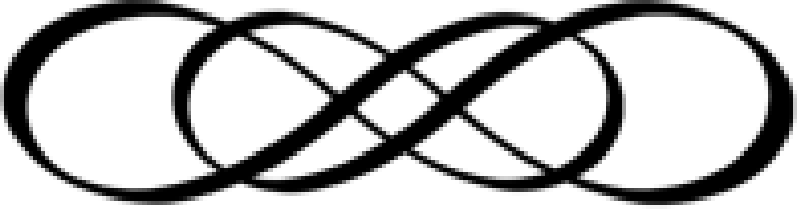
75

कपि ने न कुछ सोचा समझा झपटे उजाड़ तरु फल खाये।

सब रखवाले थे आतंकित न साहस था जो रुक जाये॥

कुछ भट तो अब ललकार रहे अस्त्रों से मिलकर वार किया।

विपदा थी बहुत विकट मानी लंकापति को जा बता दिया॥

76

हे नाथ भयानक कपि आया वाटिका नष्ट करता है वह।

वट वृक्षों को करता उखाड़ मीठे फल ही सब खाता वह॥

रावण को क्रोध विकट आया भेजी तुंरत सेना अपार।

आज्ञा थी दया नहीं करना करके उपाय दो उसे मार॥

77

हनुमत में बल का संचार हुआ रावण सेना पर टूट पड़े।

पटका चीरा वो चिंघाड़े श्री राम घोष निरद्वंध खड़े॥

पर्वत से कपि थे अति विशाल सेना न उनकी सानी थी।

मरे बहुत अति घायल थे कपि को यम सम ही जानी थी॥

78

रावण को न विश्वास हुआ कपि बलशाली खुद ही जाना।

सेना की कमान दी अक्ष को कपि वध का मानक माना॥

रथ पर चढ़ कर सुत अक्ष चला हनु का मद मर्दन करने।

गरज रहा चिंघाड़ रहा आ दुष्ट सजग हो अब मरने॥

79

टूट पड़ी सेना कपि पर चिंता न भय था अब भारी।

चपल अधिक आक्रामक थे हनु, सेना की थी मति मारी॥

सेना में भगदड़ देख अक्ष ने कपि पर खुद ही वार किया।

हनु ने देखा उसको घूरा मुटका प्रहार कर गिरा दिया॥

80

खून बहा रोते चिल्लाते अक्ष गिरा वे सब भागे थे।

कपि थे अब खूंखार हुए जय राम कहा फिर भी आगे थे॥

उठा अक्ष फुर्तीला था वह कपि बल उसको न भाया।

नौंचा चीरा फाड़ा मारा प्रभु नाम लिया प्रभुमय पाया॥

81

निज सुत का दारूण वघ सुन कर रावण था दुखित हुआ भारी।

यह दुख क्रोध विकट बन फूटा मेघनाथ की अब बारी॥

हत्या नहीं बांध कर लाना तुम सक्षम न त्रुटि हो इसमें।

युवराज तुम ही बलशाली हो करना जुगाड़ हो हित जिसमें॥

82

लघु भ्राता के वध से क्रोधित अब मेघनाथ दुःख हरना था।

ब्रह्माण्ड न योद्धा था जैसा वो मन में सीखा न डरता था॥

हनुमत सोचा अति बलशाली धनुरवीर परवारी है।

है ठसक बहुत अभिमानी है प्रभु कृपा नहीं लाचारी है॥

83

भूधराकार हनुमान बने श्री राम घोष धावा बोला।

हथियार बना जो वट उखाड़ करते प्रहार न मन डोला॥

हनुमान बने यमराज काल के देव विकट सेना मारी।

तांडव सा करते रघु सेवक विध्वंस सकल निसिचर भारी॥

84

मुठिका कठोर मारी नृप को गिर गया न वो अब उठ पाया।

वानर ये नहीं मायावी है यह देव शक्ति का ही साया॥

कुछ सोचा था कुछ ध्यान किया तरकस से देविय वाण लिया।

ब्रह्मा का वो अमूल अस्त्र कपि पर स्थिर हो प्रहार किया॥

85

हनुमत थे ज्ञानी प्रभु सेवक ब्रह्मास्त्र जान कर जोड़ खड़े।

ब्रह्मा के ये पावक वाहक है हित है बस ये नहीं अड़े॥

गरजा विकट वो मेघनाथ जय नांद किया वो हर्षाया।

प्रभुभक्त ने की जीवन रक्षा मूर्छित न हो न डरपाया॥

86

पिता दशानन का पालन कर नागपास से कपि जकड़ा।

हो हल्ला सा मचा हुआ था मेघनाथ हनु को पकड़ा॥

ये अफवायें सुन-सुन कर निसिचर आये कपि को लखने।

दुर्जन थे वे करते प्रहार नोंचे काटे न थे अपने॥

87

था मेघनाथ अब उत्साही सेना थी बांध हनु लायी।

पथ लंबा था बाधा भी थीं गाजे बाजे मस्ती छायी॥

बड़े सतर्क थे प्रहरी जकड़े हनु को लंकेश सभा लाये।

हनुमत थे निडर न घबराये प्रभु राम जाप करते आये॥

88

रावण सिंहासन पर बैठा था सोच रहा न दुर्दिन आये।

क्रोधित था बहुत विकल भी था हनु को बांधे रक्षक लाये॥

चेहरा दावानल जैसा था आँखों से अंगारे बरसे।

रे वानर दुष्ट बता पापी है कौन यहां आया कैसे॥

89

लंकापति का स्वर गर्वीला था पापी को दंडित करना था।

ये पूछतास सब नाटक था भंजक को तो अब बस मरना था॥

फिर पूछा क्या नाराजी है उपवन वाटिका उजाड़ी क्यों।

अक्षय को बोलो क्यों मारा सेना की साज बिगाड़ी क्यों॥

90

हनुमत थे शांत सहज बोले श्री राम दूत हनुमान हूं मैं।

उनकी सीता को हर लाया अब खोज लगा आया हूं मैं॥

है कार्य यही माँ सीते से ले क्षमा पाप को तू धोले।

वापिस कर उन्हें विदा कर तू माफी ले न मन को डोले॥

91

रावण चीखा "खामोश" कहा कर ले कृपाण वो गुर्राया।

हे दुष्ट नहीं है डर तुझको मत फूले तू अब मुर्झाया॥

सोने की लंका है मेरी सब देवों का में भक्षक हूँ।

नत हो स्वीकार करे मुझको मैं इन सब का रक्षक हूँ॥

92

हे कपि अपराध न बस इतना कुछ हिसाब पुराना बाकी है।

प्रभु राम कहा करते जिनको उनका अपराध भी काफी है॥

खरदूषण त्रिसिरा बाली का हंता तेरा ही राम रहा।

प्रिय सूर्पनखा की नाक काट हत्या पीड़ा में नाम रहा॥

93

हनुमंत खड़े थे डरे नहीं दुश्मन का न कुछ भी भय था।

भूखा था कपि हूं फल खाये न पाप न दिल में बस जय था॥

भोजन को रोका क्या न्याय यही मारा मुझको मिल दुर्बल को।

रे नृप तुम बड़े घमंडी हो दिखलाते छल बल निर्बल को॥

94

सीमा थी खुद ही पार करी बांधा मुझको आहत करके।

रावण ये न्याय तुम्हारा है कोंचेगा दिल तुमको मरके॥

ये राजधर्म लंकेस सुनो दूतों के प्राण न लेते हैं।

गुस्सा हो क्रोध अलग है ये आतिथ्य सदा ही देते है॥

95

रावण में दूत राम का हूं रक्षक वो सब जगती तल के।

रघुकुल की रीत सदा से है न्याय सदा हो न भटके॥

उनको तुम अपमानित करते अब काल तुम्हारा आया है।

ये महा पाप निश्चित मानो न अब विनाश बच पाया है॥

96

कपि के तीखे बचनों को सुनकर अट्टहास लंकेस कहा।

रे वानर बना महा ज्ञानी समझा सबको मतिहीन यहाँ॥

अति की अब अति ही होती है रे दुष्ट न तू बच पायेगा।

न राम यहां आ पायेंगे सीता को भी न पा पायेगा॥

97

वरदास्त किया कपि दूत है तू बदजबान बच पाया है।

न मालुम न जाना तूने रे मूर्ख यों चल तू आया है॥

सीमायें सब लांघी पापी न तू अब बचने पायेगा।

धरती तल हो सब तेरे है शपथ नरक तू जायेगा॥

98

हनुमत समझे ये मूर्ख अभी प्राणों का मेरे प्यासा है।

राजधर्म का ये दुश्मन बचने की कुछ न आशा है॥

रावण की कोधाग्नि को घी डाल बड़ाया हनुमत ने।

मौत नहीं मेरी अब तेरी दुष्ट चला है बस मरने॥

99

रावण अब क्रोध से पागल हो बोला मारो ये पापी है।

दूतों के मन की बात हुई झपटे बचना व बाकी है॥

दल सहित विभीषण फिर आये देखा अब था संकट भारी।

सादर झुक कर सम्मान दिया जाना मति इनकी ही हारी॥

100

भ्राता ये नीत बचन कहता वाहक का वध न होता है।

यह तो निज प्रभु का दास रहा काटेगा जो वो बोता है॥

माना पातक अति पापी है दारूण दुख का ये भागी है।

दें अति कठोर अब सजा इसे चीखे न ये बड़भागी है॥

101

उचित जान भ्राता की सम्मति नीच बचन दसकंधर बोला।

अंग भंग इसकी दुर्गति कर भेजो न कपि थोड़ा भोला॥

वानर को पूंछ बहुत प्यारी कटना दुख का कारण होगा।

बिन पूंछ वापसी ही होगी रघु का प्रलाप दारूण होगा॥

102

आज्ञा कठोर दी रावण ने कपि पूंछ लपेटे कपड़े में।

भरपूर तेल में भिगो उसे दें आग लगा न खतरे में॥

देखें ये सब लंका वासी अपराधी बच न पाता है।

मायाबी हो बलशाली हो अपमानित वापिस जाता है॥

103

हनुमान बड़े आनंदित थे प्रभु कार्य न कुछ रह जायेगा।

अग्नि है देव सहायक भी लंका में दुर्दिन आयेगा॥

कपड़ा भी तेल जरूरी था निसिचर तुरंत लेकर आये।

सब कपड़ा भी खतम हुआ हनु पूंछ न फिर भी ढक पाये॥

104

हनुमत थे बस अब मायावी कपड़ा न तेल हुआ पूरा।

लाते थे सब खप जाता था परेशान हुआ रावण घूरा॥

ललकार कहा दो आग लगा पर सावधान रहना तुम सब।

ये कपि न बच अब पायेगा चाहें रघुवर आ जाये अब॥

105

चमत्कार हनुमत में था पावक जलते लघु रूप लिया।

बंधन मुक्त हुआ बोला जय राम महा उत्पात किया॥

कपि थे कपि के गुण सब आये ली अब उद्दाल डर सब धाये।

स्वर्ण मयी लंका जलती सब निसिचर थे बस डरपाये॥

106

विध्ध्वंस लक्ष था हनुमत का रूप बड़ा भयकारी था।

मंदिर से मंदिर पर कूदे जलते प्रसाद दुख भारी था॥

रोते चिल्लाते सब बेबस मरना ही बस लाचारी था।

साधन सब धू-धू जलते थे असहाय बिलखना जारी था॥

107

कपि को सबने दैविय माना लंका न अब बच पायेगी।

देव पुरुष ये वानर है ज्वाला सबको तड़पायेगी॥

न कहीं सहारा मिलता था थे वे निराश बस रोते थे।

जीवन संचित पूंजी जलती स्वासों का बंधन खोते थे॥

108

जलते सब महल महंतों के धनवान भी न बच पायेंगे।

बालक युवा नर नारि दुखी न पता कहां अब जायेंगे॥

ये कुबेर की स्वर्णिम लंका हनुमत से ही बस हारी थी।

श्राप है वानर कपिवर का न बचने की अब बारी थी॥

109

लंका विनास कर हनुमत नें मन में प्रभु को सम्मान किया।

अग्नि नें दुष्टों को दंडित कर मानवता का ज्ञान दिया॥

धन्य विभीषण बच पाये प्रभु नें भक्ति से रब जोड़ा।

था चमत्कार ये अग्नि देवता ने बस उनका घर छोड़ा॥

110

भ्रात विभीषण कुशल जान हनुमत में प्रभु का हित माना।

लंका अब तहस-नहस थी बस कपि ने निज कार्य हुआ जाना॥

प्रभु भक्त कूद कर सागर में ज्वाला को सादर शांत किया।

न रुके न कुछ विश्राम किया सम्मुख सीता जा मान दिया॥

111

कर जोड़ झुके हनुमान मात से किया निवेदन नत होकर।

प्रभु राम निशानी में लाया दो माँ कुछ उनको न रोकर॥

जनक नंदनी थी सचेत चूड़ामणि देकर विदा किया।

हनुमत ने अब प्रस्थान किया माँ को फिर से सम्मान दिया॥

112

हनु सादर कहना मेरा प्रणाम दुखियारी हूँ मैं अब भारी।

जीना तुम बिन न संभव है रावण है कामी व्यभिचारी॥

सीता नें अब भावुक होकर प्रभु से विनती की रो-रो कर।

बस मास दिवस ही सीमा है पाओगे न मुझको खोकर॥

113

सुत तुमने ये उपकार किया बांटा प्रभु का दुख तुम आये।

ये रात दिवस बैरी सम हैं जीना व अब दिल को भाये॥

हे प्राणनाथ तुम रक्षक हो जगतीतल की दुखिया हारी।

जीवन है ये अनमोल नहीं हैं आप नहीं है लाचारी॥

खंड पंचम (5)

हनुमत चले राम के पास
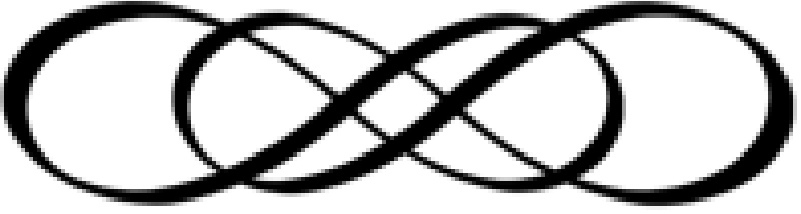
114

प्रभु कार्य हुआ पूरा हनुमत माँ सीते का गुणगान किया।

थे दीप्तमान बलशाली थे प्रभु से मिलना अब ठान लिया॥

गति तीव्र पथिक हनुमान चले प्रभु की जय करते जाते थे।

सब बिखरा-बिखरा लगता था निसिचर संकट ही पाते थे॥

115

न समय लगा ज्यादा हनुमत को सागर तट पर आने में।

स्वर्ण पुरी की सीमा भी आ गयी तभी अंजाने में॥

केसरी को न रूकना था न भूख प्यास थी कुछ बाकी।

वायुदेव थे पथ दर्शक उड़ चले हनु रब के साथी॥

116

सागर विशाल नीचे हनुमत नभ देव सहित उड़ते जाते।

प्रभु रक्षा का था कवच पास प्रमुदित ही वो वापिस आते॥

कपि सेना तट पर आतुर थी हनुमत उनके गुण गाते थे।

न बाधा न अवरोधक था कपि केसरी उड़ते आते थे॥

117

हनुमत देखा नभ में आते सेना ने जय-जय कार किया।

हनुमान ललक श्री राम कहा जय घोष सहित अनुनाद किया॥

रघुपति सेवक उतरे तट पर बोले जननी माँ खोज लिया।

हर्षित सबने जय राम कहा झूमे मटके मदहोश किया॥

118

अब विलंब न मन भाया हनुमत आगे अब नहीं रुके।

न दुःख था सब पगलाये थे बाधायें थी पर नहीं झुके॥

सब योद्धा थे बलशाली रण जीता था हर्षाये थे।

हनुमत थे आगे पीछे वे सम्मान सुमन वर्षाये थे॥

119

बहुत चले न कुछ खाया था थके बहुत भूखे भारी।

मधुवन देखा वो टूट पड़े खाये फल न थी लाचारी॥

रखवालों ने रोका डपटा मार पीट उनको डरपाया।

भयभीत हुए कुछ बस न चला कपिराज पहुँच सब बतलाया॥

120

सुग्रीव राज अब हर्षित थे जाना कपि मधुवन फल खाये।

निश्चित ही कार्य हुआ जाना कपिवर अब सीता सुध लाये॥

न समय लगा कोलाहल था हनुमत आगे योद्धा आये।

जय-जय कार मचा था भारी सब गर्भित मन को भाये॥

121

पद शीस झुका सम्मान दिया प्रभु कार्य हुआ ये बतलाया।

हनुमत थे खेवनहार बने लांघा जलनिधि माँ को पाया॥

दुर्दांत दस्यु सम्राट स्वर्ण नगरी का बस अपराधी था।

निसिचर रक्षित उपवन में बंदी सीता वो वादी था॥

122

सबको राहत थी सब प्रसन्न कपिवर ने सबको मान दिया।

रक्षक थे बस हनुमान बने प्रभु राम भक्ति से काम किया॥

सुग्रीव बहुत आनंदित थे ऋण प्रभु का तनिक उतारा था।

वानर सेना थी सब लायक था कार्य कठिन न हारा था॥

123

मिलन अधूरा था अब तक प्रभु राम शरण हनुमत आये।

सुग्रीव साथ थे केसरि के पीछे सुभट्ट सैनिक लाये॥

प्रभु राम भक्त हनुमान साथ कपि सेना पा अति सुख माना।

हर्षित थे सब आनंदित थे सब कार्य सफल हनुमत जाना॥

124

राम सहित लघु भ्रात लखन पट्टिका शिला पर बैठे थे।

देखा प्रभु को कपिवर पुलकित चरणों में सादर लेटे थे॥

रघुवर ने लेकर आलिंगन हनु को निज बंधन में बाँधा।

ये प्रेम बड़ा सुखदायी था प्रभु भक्त एक न थी बाधा॥

125

कुशल राम पूछी हनुमत से जामवंत ने यों बतलाया।

रक्षक आप कृपा है रघुवर हनुमत सीता की सुध पाया॥

महाबली केसरी नंदन है भक्त आपके कष्ट बिहारी।

दुष्ट महापापी कामी था लंकापति की दशा बिगाड़ी॥

126

जामवंत हनुमत चर्चा सुन रघुपति ने अति सुख माना।

सीता को खोजा कपिवर ने थे भक्त प्रथम निज हित जाना॥

हनुमत थे कार्य सिद्ध दाता ये ज्ञान हरषि रघुवर भाया॥

न रुके न कुछ भी सोच किया निज बाहुपास कपिवर पाया॥

127

सब देख रहे आनंदित थे यह छटा बहुत हितकारी थी।

प्रभु मांगे आभार भक्त से रीत सदा बड़भागी थी॥

हनुमत बैठाया पास शिला पर पूछा कैसी सीते तात।

दुष्ट बहुत निसिचर दारुण है काटे वे कैसे दिन रात॥

128

हनुमान हृदय भी भर आया प्रभु भी विछोह में खोये थे।

है कुशल मात सीता रघुवर यादों में प्रभु पथ जोहे थे॥

मुद्रिका मात ली सुख माना चूड़ामणि नाथ भेजती हैं।

भौतिक ये मिलन नहीं संभव कुछ दुःख थोड़ा ये हरती हैं॥

129

करुणा निधि ने भी सुख माना चूड़ामणि दिल से लिपटाया।

बीती यादें अंकुरित हुई क्षण को प्रियतमा निकट पाया॥

आँखों से मेघ बरसते थे प्रभु माँ ने ये संदेश कहा।

विधि ने बंधन जोड़ा प्रियतम छोड़ा ये क्या अपराध रहा॥

130

हे नाथ बहुत ही दुखी प्रभु यह विरह बड़ा दुखदायी है।

हो मिलन शीघ्र ही रघुनंदन ये आखें अब पथरायी हैं॥

रघुवर सीता अति ब्याकुल थीं जीने की चाह न बाकी थी।

पागल रावण था अति लपट सीते न कुछ सह पाती थी॥

131

सीता का यों विलाप सुनकर श्री राम न धीरज रख पाये।

दिल टूट गया वे विकल हुए नैनों से अश्रु बरस आये॥

अश्रु दावानल में बदले क्या करना इसका भान हुआ।

पापी का अब हो विनाश निर्णय अटूट ये ज्ञान हुआ॥

132

हनुमत उपकारी बने राम के रघुपति अति आभारी थे।

गद-गद तन मन सब अर्पित था हनु पर ही अब बारी थे॥

सीता की सुध का कार्य कठिन केसरि ही बस कर पाये थे।

रघुबर खुद हनु से उपकृत थे उपकार सदा मन भाये थे॥

133

वर मांगों हनुमत प्रभु कहते जो मांगो सब मिल जायेगा।

यों साथ न कोई देता है उपकार तुरत चुक पायेगा॥

प्रभु पुलकित थे न दिल बस में हनुमत से हटती दृष्टि नहीं।

आँखों से झर-झर नीर बहे केसरी सम था न पास कहीं॥

134

भगवान भक्त की ये लीला अनुपम थी तथा निराली थी।

दोनों ही दोनों में खोये भ्रमजाल न कुछ भी पाली थी॥

ये प्रेम अगाध न थमता था प्रभु ने हनु को निज लिपटाया।

निज सखा परम उनको माना बस पास स्वयम् ही बैठाया॥

135

हनुमत नें प्रभु का प्रेम देख बोले उनका भी मन मोड़ा।

प्रभुवर यों सीता को खोजा रावण का मद भी बस तोड़ा॥

प्रभु राम आपका ही प्रताप था स्वर्णमयी लंका जलती थी।

निसिचर सब आतुर व्याकुल थे मंदिर न बस्ती बचती थी॥

136

रावण सुत अक्षय को मारा उपवन भी बरबाद किया।

माँ सीता की आशीष साथ थी प्रभु को ही बस याद किया॥

प्रभु हैं समर्थ सब काम हुआ मेरा इसमें न अपना है।

यह तो बस प्रारंभ मात्र माँ सीता मिलन न सपना है॥

137

हनुमत विनीत होकर बोले मांगूं कुछ भी न भाता है।

यह कृपा प्यार अपनापन सब प्रभु सब कुछ खुद ही आता है॥

हां इच्छा एक रही बाकी ये भक्ति सदा बढ़ती जाये।

धन माणिक यश सब व्यर्थ लगें जय राम भजन ही मन भाये॥

138

हनुमत खुद मे प्रीति देख श्री राम पुलक हर्षाये थे।

केसरी की इच्छा पूरी की ममता प्रसून वर्षाये थे॥

कपि बृंद राम भक्ति में खोया जय-जय प्रभु का गान किया।

सब मस्त उन्ही के सेवक थे चरणों में झुक कर मान दिया॥

खण्ड षष्टम (6)

लंका की विजय यात्रा
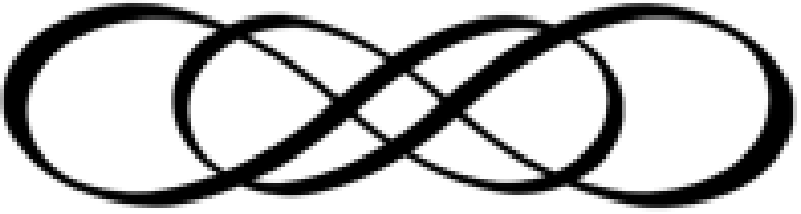
139

हर क्षण बहुत कीमती था रघुवर सुग्रीव सहज बोले।

सेना सब को सूचित कर दो आयें वे तुरत न मन डोले॥

कपिपति ने अनुशासन माना वाहक को चहुँ दिश पठवाया।

आज्ञा कठोर थी आने की न मार्ग दूसरा बतलाया॥

140

सब कुछ लगता चौकन्ना सा रण की भेरी ही बजती थी।

चहुंदिश में भी हलचल भारी कपि भालू सेना बसती थी॥

सब चौकन्ने उत्साहित थे रोगी न कोई लगता था।

डरते नहीं किसी से वे बस प्रेम भाव ही पलता था॥

141

रघुपति विशाल सेना देखी हर्षित न कार्य कठिन जाना।

रावण के सर खंडित होंगे लंका विनाश निश्चित माना॥

क्षमता अद्भुद कपिराज प्रवर ये मान तथा सम्मान दिया।

प्रभु दयालू थे जगपालक थे सद्गुण का खुद गुणगान किया॥

142

सब भट्ट सुभट्ट आनंदित थे था जोश गर्जना करते थे।

जय राम घोष गूँजा करता प्रभु चरणों में ही रमते थे।

रघुपति सबको अपना समझे स्नेह हर्ष बरसाते थे।

ये अमिट प्रेम ही बंधन था अनजाने में सब बंध जाते थे॥

143

शुभ कार्य सहायक सकल देव ये सगुन स्वयम् बतलाते थे।

मदमस्त प्रकृति इठलाती थी पक्षी कलरव मस्ताते थे॥

माँ सीता को चेतना हुई बामांग फड़कते शुभ जाना।

अनुभूति स्वयम् दिल में पाली प्रियतम के दर्शन को पाना॥

144

विधि की महिमा भी अद्भुद है सद्गुण को सुख ही देते हैं।

पापी हो अत्याचारी खुद पीड़ा दुख निज ही लेते हैं॥

सीते माँ को थे शकुन हुए लंका में अशगुन छाये थे।

पशु पक्षी खुद क्रंदन करते नभ भी उल्का बरसाये थे॥

145

रघुवर सेना थी बलशाली भालू वानर सब गरज रहे।

दुश्मन को दे मिल कर पछाड़ भाले बरछी सब चमक रहे॥

सब योद्धा अति उत्साही थे अब रुका न उनसे जाता था।

सुग्रीव स्वयम् ही नायक थे सब अनुशासन हो पाता था॥

146

कपि पति ने रघुवर को देखा कर जोड़ विनय से वे बोले।

प्रभु प्रकृति सहायक है प्रियवर मार्ग कठिन न चित डोले॥

सेना अपार सेवा को है अब कृपा इन्हें अब बढ़ने दें।

है जोश कार्य करने का प्रण है अनुशासन अब चलने दें॥

147

प्रभु राम तनिक सा मुस्काये भ्राता लक्ष्मण को याद किया।

आँखों में ही कुछ बात हुई चढ़ शिला स्वयम् संवाद दिया॥

सब कुछ विधि बना सहायक है ये राम सदा आभारी है।

लंका का मार्ग कठिन ही है अब चलें न कुछ लाचारी है॥

148

प्रभु की आज्ञा मानी सबने सर शीश झुका प्रस्थान किया।

कुछ पैदल कुछ वाहन में थे नभचारी ने भी मान दिया॥

सागर सम सेना थी विशाल हर्षित देवो ने सुख माना।

प्रभु राम कार्य करने का हट अति उत्तम सर्वोत्तम जाना॥

149

सब रूप अलग सब भेष अलग हिमगिरि सा रूप महकता था।

बरछी कृपान भाले भी थे मोहक ही रूप चहकता था॥

हनुमान स्वयम् थे पथ दर्शक बाधायें पास न आती थीं।

गरजे हर्षित दीवाने थे प्रभु ममता ऊर्जा लाती थी॥

150

पाहन श्री राम लखन चलते सुग्रीव यूथपति साथ चले।

न आदि अंत न दिखता था सागर सी प्रभु की ज्योत जले॥

कोलाहल था मचा हुआ सब गर्वित थे मतवाले थे।

था लक्ष्य एक ही गति अगाध दाता के ही वृत वाले थे॥

151

अब सब दिगंत थर्राये थे धरती माँ डगमग करती थी।

वानर सेना विकराल बनी देवों का दुख सब हरती थी॥

नांद प्रबल केसरी करते कपि भालू गर्जन करते थे।

यह रूप बड़ा ही अद्भुद था सज्जन हर्षित खल डरते थे॥

152

हनुमान जलाया लंका को निसिचर अब चैन न पाया था।

असगुन होते सब शंकित थे बस अब विनाश पल आया था॥

दूत बने वानर से जब रावण ही बच न पाया था।

प्रभु खुद ही रण में आयेंगे संकट अब सब पर आया था॥

153

रावण पत्नी भी दुखी बहुत मंदोदरी खुद अकुलायी थी।

हैं सब शंकित अति डरे हुए महारानी सुन दुख पायी थी॥

संकट ये कैसे टल जाये अति प्रेम सहित प्रिय से बोली।

हे नाथ सहज ही हट त्यागें हैं दुखी सभी हा मति डोली॥

154

हे प्राणनाथ है विनती यह पर नारी का प्रभु त्याग करें।

सम्मान सहित कर विदा उन्हें लंकापति सबका कष्ट हरें॥

हे विनय सहित विनती मेरी अभिमान मोह सब कुछ त्यागें॥

सीता निज प्रभु की निधि जाने प्राणेश्वर अब खुद भी जागें॥

155

यह हृदय बहुत शंकित है प्रभु सीता बन आंधी आई है।

वानर वो बहुत भयानक था अक्षय वध भूल न पाई है॥

संकट लंका पर आया है, हे नाथ विनय बस हट छोड़ें।

ज्ञानी हैं ध्यानी रक्षक हैं लंकापति सबका डर मोड़ें॥

156

रावण था कालग्रसित पापी प्रिय की पुकार न मन भायी।

विधि ने उसकी मति हर ली थी आशक्ति न खुद ही हट पायी।

पत्नी की बात नहीं भायी हंस कर अभिमानी यों बोला।

स्वर्णिम लंका का अधिपति हूँ हे प्रिये क्यों फिर मन डोला॥

157

देवता सदा मुझसे हारे भट सुभट्ट विकट बलशाली हैं।

विश्व झुका मेरे कदमो में सेना भी अब मतवाली है॥

वानर भालू भक्षेंगे निसिचर मिल कर वे बस पछतायेंगे।

ये सागर रक्षक प्रिय है न पार वे मिल कर पायेंगे॥

158

अब लंका का दुर्दिन आया न धर्म अधर्मी जीता है।

नारी का हो अपमान सदा विधि का प्रहार भी तीखा है॥

संकट के बादल छाये हैं मंदोदरी का था दुख अपार।

अभिमान कपट के सब बस में नइया थी न अब आरपार॥

159

प्रिय के वचनों को न माना लंकापति राजभवन आया।

बैठा वो सिंहासन पर जाकर क्षेत्रप को नतमस्तक पाया॥

समाचार चिंतित करता कपि सेना सिंधु पार आयी है।

युद्ध विकट होना संभव है शांति नहीं अब हो पायी है॥

160

मंत्री सब बैठे चिंतित थे लंकेश कहा क्या करना है।

देवों को जीता अब हमनें वानर सेना को बस मरना है॥

निसिचर भक्षण कर रिपु दल को त्रप्त स्वयम् को पायेंगे।

थे विजय आस लेकर आये निश्चित ही सब पछतायेंगे॥

161

रावण को खुद था बल का घमंड मंत्री सबकी थी सोच यहीं।

पापी थे सब व्यभिचारी थे नैतिकता का अब जोश नहीं॥

विधि नें सबकी मति हरली थी अति बलशाली बन ऐंठे थे।

आमिस भोजन कर सुरापान नृप संग मदमाये बैठे थे॥

162

सब रावण के गुण गाते थे जयकार गर्जना करते थे।

अट्टहास कर झूम रहे लंका संकट मिल हरते थे।

अवसर ये उचित स्वयम् जाना लघु भ्रात विभीषण खुद आये।

कर चरण वंदना आदर दे झुक कर उनके दर्शन पाये॥

163

लघु भ्रात विभीषण नत मस्तक निज आसन पर बैठे आ कर।

विनय सहित सम्मान साथ बोले नृप अनुशासन पाकर॥

कठिन डगर है राजधर्म की प्रजा सुखी रक्षा ही पथ है।

स्तुति प्रेम प्रशंसा सुखकर संकट समय अलग ही मत है॥

164

नृपवर ये मेरा मत सुनलें लंका का हो कल्याण सदा।

कष्टों का साया न आये गुंजित ही महके धर्म गदा॥

कर क्षमा नाथ में कहता हूँ पर नारी का सम्मान करें।

विष बेल अमंगल अनाचार हो कभी न अब अपमान करें॥

165

पीड़ित होती है अब नारी हे नाथ न संकट छोटा है।

है अति विशाल सेना छायी दुदंति समय भी खोटा है॥

बल पौरुष का उन्मुक्त गान ये भाव सदा सबको भाते।

विधि का विधान प्रतिकूल हुआ निश्चित ही वासी दुखपाते॥

166

कैद बनी सीते लंकापति दुर्दिन ये निश्चित जानो।

हो अमन चैन सब हर्षित हो हे कृपानाथ मति ये मानो॥

हे विनय परम प्रभु अनुमति दें पर नारी को सादर छोड़े।

कर विदा उन्हें हर्षित मन से विपदा को प्रिय फिरसे मोड़ें॥

167

रावण में दावानल फूटा लघु भ्रात वचन न मन भाया।

रक्तिम चेहरा खौला अंतरमन मतिभ्रम में खुद पगलाया॥

रे दुष्ट बड़ा वाचाल बना हित अनहित का भी ज्ञान नहीं।

मानव की है अब क्या बिसात देवों का भंजक भान नहीं॥

168

हे दुष्ट बड़ा ही पापी है निश्चित दुश्मन से नाता है।

ब्रह्मांड सकल भुजबल जीता निर्लज्ज तू क्यों इतराता है॥

खाता खुद ही तू मेरा है मुझको ही तू पापी कहता।

ये धर्म अधर्मी बतलाता सुख चैन यहां खुद ही हरता॥

169

रावण क्रोधित लघु भ्राता पर हित लाभ न कुछ उसने माना |

देवों का भक्त बना दुर्जन कपटी लंपट बुजदिल जाना॥

माल्यवंत थे ज्ञानवान वे राजधर्म के ज्ञाता थे।

वयोबृद्ध अति ध्यानी थे राजा कुल के प्रिय दाता थे॥

170

बोले मंत्रीवर क्षमा करें लघुभ्रात सदा हितकारी है।

हे चाटुकार वो नहीं महज रणधीर तथा उपकारी है॥

मेरी यह विनय आपसे है द्रोही न उन्हें अपना मानें।

हैं नीतवान वो दयावान निसिचर क़ुल का सपना जानें॥

171

माल्यवंत फिर मौन हुए कर जोड़ भवन प्रस्थान किया।

लंकेस यथा क्रोधित ही थे मंत्रीवर को न मान दिया॥

लघु भ्रात विभीषण आतुर थे सविनय कुलपति से वे बोले।

हे यही प्रभु बस आवेदन पर नारी के बंधन खोलें॥

172

रावण हुआ क्रोध में पागल सुध-बुध सब उसने त्यागी।

रक्त नेत्र लालिम था चेहरा निज भ्राता वध की मति जागी॥

दंडित करना ही अब उत्तम नहीं उसे कुछ भी सुध थी।

छोड़ मंच झपटा अभिमानी खड़ी विभीषण की बुत थी॥

173

अति क्रोधित चरण प्रहार किया पगलाये न अब बस में थे।

भ्रात विभीषण पीड़ित थे चोटिल थे फिर भी रब में थे।

गंभीर हुए लघु भ्रात विभीषण कहा राम को भज लो तात॥

पिता सरिस भ्राता यों मारा मुझको न कुछ इसकी लाज॥

174

चार सचिव ले साथ विभीषण नभ पथ से लंका छोड़ी।

जहां धर्म केवल पिसता हो देव विमुख मति खुद मोड़ी॥

संत हृदय लघु भ्रात सदा से राम नाम के व्यापारी।

किया भला संभव हो जितना रीत न कुल की यों हारी॥

175

कहा विभीषण ने आतुर हो कालपास लंका घेरी।

कुल वरिष्ठ अपमान किया मानी सद् विनय नहीं मेरी॥

रीति सदा ये चल आयी होनी टाल कोई न पाया।

भगवान राम को कुपित किया उनकी ही शरण में अब आया॥

176

लघु भ्रात विभीषण के चलते ही अपशगुन हुए होने जारी।

काल दृष्टि से श्रापित थे सब चलने की अब थी बारी॥

समझें ये ज्ञान सदा हो सबको साधू का न अपमान उचित है।

विधि का वार बड़ा घातक है सर्व विश्व का ज्ञान रचित है॥

177

रावण का भ्राता पर प्रहार सुख शांति सभी छीनी उसकी।

डर था वो प्रभु से कंपित था मति मारी न सदगति जिसकी॥

सोने की लंका सजी रही नैतिकता साथ सदा छोड़ा।

भौतिक सुख था वो अपनाया चिंता अपयश पथ पर मोड़ा॥

178

पाप भार सब पटक दिया प्रभुमय मोहित था निज पथ पर।

अवगुण छोड़े लंका त्यागी भज राम-चला बिन ही रथ पर॥

पुलकित था गात प्रफुल्लित था चरणों को प्रभु के ध्यान किया।

प्रभु राम-राम सीता सुमिरन ये ज्ञान हृदय को स्वयम् दिया॥

179

प्रभु चरणों की महिमा अनंत ऋषि नारि अहिल्या को तारा।

दंडक वन को भी धन्य किया दुर्दांत असुर को भी मारा॥

वे चरण बड़े बड़भागी थे जननी सीता निज उर लाया।

पादुका उन्हीं चरणों को पूजा लघु भ्रात भरत नें सुख पाया॥

180

भक्ति राम में विचरण करते सागर पार विभीषण आये।

कठिन मार्ग बाधायें भी थीं लांघी कभी न चकराये॥

तट पर कपि सेना थी विशाल अजनवी देख वो घबराये।

सोचा रिपु दूत समझ उनको वानरपति को चल बतलाये॥

181

सुग्रीव तुरत रघु पास गये बोले रिपु दूत स्वयम् आया।

निसिचर हैं सब अतितायी है महिमा इनकी न समझ पाया॥

रावण ने इनको ही भेज़ा मायावी दुष्ट कहाते हैं।

आज्ञा दें प्रभु दंडित हों ये दुश्मन न छोड़े जाते॥

182

श्री राम सहज बोले कपिवर शरणागत मुझको प्यारे हैं।

हो सकता है पीड़ित हों वे दुर्दिन से खुद ही मारे हैं॥

प्रभु बचन सुने हनुमत ने जब हर्षित अति सुख उर में माना।

दुश्मन हैं या शुभ चिंतक हैं ये ज्ञान प्रथम निश्चित पाना॥

183

रघुवर बोले हे तात सुनो शापित में भी धड़कन होती।

आ गया सदा सच संवाहक मन की बस भटकन होती॥

भक्ती सम्मान लिये आया भगवत की ही प्रीति सदा साथी।

चंदन पादप लिपटे भुजंग दुर्लभ रस गंध न कुछ जाती॥

184

प्रभु का स्वभाव गंगाजल है पापी कपटी भी तर जाते।

निज भजन मनन सद् मंगल से सज्जन बन सदगति ही पाते॥

मन के घोड़े अति चंचल हैं प्रभु ध्यान सहज न दुख आता।

सोचो सब कुछ अच्छा ही हो बंधन सब खुद ही कट जाता॥

185

भगवान राम थे नीतिवान वे सजग दृष्टि सब पर रखते।

दुर्दांत दूत हैं रावण के उर्जा न कम निश्चित भरते॥

लभु भ्रात सुभद्रा तनय विकट हैं शक्तिपुंज बलशाली हैं।

निसिचर हों अति संघाती भी मिटना हो वो यशधारी हैं॥

186

भ्राता सुग्रीव उचित है ये सादर उनको लेकर आयें।

सीता की खोज परम पथ है सन्मार्ग न बाधा कुछ आ पाये॥

नल नील सहित हनुमान चले पांचों को पथ आते देखा।

सादर कपि साथ उन्हें लाये प्रभु राम भजन गाते लेखा॥

187

भक्त विभीषण आनंदित थे प्रभु दर्शन का पल आया था।

रघुपति की मूरत थी बसी दिल में पल-पल युग सम ही पाया था॥

शिलाखंड बैठे भ्राता अतुलित बल तेज महकते थे।

थे अनादि अनुपम अविरल पथ वाहक स्वयम् चहकते थे॥

188

प्रभु की मदिरा में मस्ताये सहचर के साथ निकट आये।

छवि देख बने मूरत खुद ही पुलकित नैना निज बरसाये॥

भुज विशाल ये कमल नयन ज्योती के पुंज अतुल रवि थे।

मात्र बने वो प्रनत पाल दुख भंजक दाता की छवि थे॥

189

सब भूले से मदमाये थे नैनों में प्रभु छवि छायी थी।

पुलकित थे तनमन दोनो ही दरस सहज ही पायी थी॥

भक्ती धारा थी उफनायी अखियों में झर-झर नीर बहे।

टपके आंसू भटका था मन धर धीर स्वयम् ये वचन कहे॥

190

कर जोड़ बने याचक भावुक स्वर में खुद ही यों बतलाया।

हूँ पापी निपट अभागा ही शरणागत नाथ स्वयम् आया॥

रावण का लघु भ्राता हूँ निसिचर कुल की है छवि मेरी।

तामस है मन तन कुलसित है दुर्जन की है गति मेरी॥

191

हैं पाप विनासक दुख भंजक हे प्रभु अब प्रीत आपसे है।

रक्षक ही बस अब मेरे हैं स्वामी सब रीत आपसे है॥

लंका में सब पगलाये हैं उन्माद पाप ने घेरा है।

तोड़ा बंधन अब हूँ स्वतंत्र चरणो में यहीं बसेरा है॥

192

वाणी खुद ही बस मौन हुई दंडवत गिरे प्रभु चरणो में।

जकडे दोनों पग स्वामी के भूले सुद बुध नित वरणों में॥

त्राहि माम बस त्राहि माम वाणी से फूटे बोल सदा।

प्रभु से याचक का अमिट प्रेम समझें पाठक अनमोल यथा॥

193

प्रभु राम हुए खुद ही हर्षित सुन दीन वचन उनको भाये।

भक्त विभीषण की पुकार सुन रघुवर खुद ही मुस्काये॥

चरण पड़े अनुराग अतुल था राम हृदय गद-गद हो आया।

भुज विशाल फैलाये दोनों भक्त प्रभु ने खुद लिपटाया॥

194

राम विभीषण पर आकर्षित लक्ष्मण साथ निकट बैठाया।

हाथ फेर धीरज देते थे भक्त विभीषण ने सुख पाया॥

अपने सेवक के डर हर कर रघुवर भावुक मधुकर बोले।

सब भेद भाव अब दूर हुए मन से मन के बंधन खोले॥

195

हे भ्रात कहें लंकेस सुखी परिवार सहज ही जीता है।

चिंतित हूँ में तुम साधु हो दुर्जन का डर न रीता है॥

निसिचर स्वभाव से तामस हैं सज्जनता से न नाता है।

हो आप स्वयम् ही बड़भागी कलुषित तन मन न पाता है॥

196

गद-गद थे तात विभीषण खुद कर जोड़ प्रभु सविनय बोले।

हे नाथ समझ पाता में खुद दुष्टों का साथ सदा होले॥

दम घोंट बनी है लंका प्रभु दुर्भाग्य यहां से नाता है।

नर्क सदा उत्तम इससे न रास तनिक भी आता है॥

197

लोभ मोह अपमान मान मर्दन का प्रभुवर मारा हूँ।

पल-पल अपमानित जीवन है विधि बाम रहा में हारा हूँ॥

रघुनाथ दरस पाकर मेरे अज्ञान पाप न बच पाये।

गंगा जल है प्रभु छवि प्रियबर सम्मुख दाता सब तर जाये॥

198

मेरे दाता में भाग्यवान चरणों की रज पा सुख पाया।

निसिचर था अधम में अज्ञानी देखा दर्शन न दुख आया॥

मुनि ज्ञानी तप करते थकते मोहक ये रूप न देखा था।

है कृपा बड़ा बड़भागी है बंधन प्रभु का रब लेखा था॥

199

भ्रात विभीषण प्रभु रस डूबे गुण का उनके गान किया।

बड़भागी खुद को ही माना रघुबर को सतत प्रणाम किया॥

चरण युगल पूजन करके भक्त विभीषण हर्षित थे।

माणिक मोती हेय लगते मादक हरि रूप ही दर्शित थे॥

200

भगवान राम विनती सुन कर हर्षित स्वभाव खुद बतलाया।

पापी कपटी विद्रोही जो आया वो शरणागत भाया॥

भक्ति बनी उपचार सदा व्यभिचारी भी तर जाता है।

मैं दीप्ति पुंज धारण करता दुर्जन सज्जन बन आता है॥

201

जननी परिवार जनक का सुख धन धान भवन सब भोगी हैं।

मद मोह छोड़ जपता मुझको प्यारा मुझको विधि योगी है॥

भय शोक हर्ष ना मेरे हैं ताप कभी ना आता है।

सज्जन मुझको अति प्यारे हैं बंधन से खुद तर जाता है॥

202

हे तात विभीषण मत मेरा तुम से सज्जन अति प्यारे हैं।

कंजूस हृदय लोभी कामी नित ही मुझसे मति हारे हैं॥

द्विज ज्ञानी जन के गुण आये उनको अति प्रिय निज पाता हूँ।

पर हित जिनका ही जीवन है पूजा मूरत हर्षाता हूँ॥

203

हे तात विभीषण माना है उन गुण के तुम ही दाता हो।

माना रावण कुल पाया है देवीय प्रतिभा के ज्ञाता हो॥

हो सोच जहाँ निज भावों पर मद सब खुद ही घुल जाता है।

हे तात प्रबल विधि को मानो हो समय सदा सुख आता है॥

204

प्रभु सेवक का संवाद सुनें प्रियवर ये नित हितकारी हैं।

भ्रात विभीषण अति पुलकित ये दाता ही बस आधारी हैं॥

चरणों को पकड़ा बार-बार स्नेह सदा बढ़ता जाता।

बहती गंगा जो प्रेममयी स्नान न दिल अब भर पाता॥

205

प्रभु का दर्शन संताप मिटा मद मोह भावना ना जागी।

थी हृदय वासना बढ़ती जो रघु चरण प्रीत कर यों भागी॥

दाता की लय में पगलाया बढ़ भाग विभीषण कहता था।

मांगू मैं प्रीति दयानिधि से, चिर प्यासा भोगी रहता था॥

206

भगवान राम भक्ति में खोये भक्त उन्हें अपना लगता था।

कुल छोड़ शरण में आया था बीते पल सपना महका था॥

प्रभुवर ने वरद हस्त रख कर अनुरोध विभीषण का माना।

बोले वो तुरत यही होगा भक्ति का बंधन निज जाना॥

207

भ्रात विभीषण तुम मेरे हो स्नेह पाश मुझको बाँधा है।

सभी कामना पूरी होंगी बंधन अब आधा-आधा है॥

एवमस्तु बोले भगवत सागर का नीर तुरत माँगा।

लौकिक ये रीत निभाता हूँ अपनापन अब खुद ही जागा॥

208

भक्त विभीषण को दे आसन खुद रघुनर ने तिलक किया।

राजा जो बने तुरंत सेवक भक्ति का स्वयम् प्रसाद दिया॥

हर्षित थे सब पगलाये थे जय राम-राम स्वर गूंजा था।

देवता स्वयम् नभ छाये थे बरसे प्रसून रब झूला था॥

209

रावण क्रोधी दावानल से लघु भ्रात विभीषण झुलसा था।

अपमानित था दुर्वचन सुने पद वार सहज ही हुलसा था॥

प्रभु राम कृपा उस पर होती मंगलकारी शुभ दिन आया।

था जो अनाथ वो बेचारा प्रभु सम आसन उसने पाया॥

210

असुरराज ने जो लंका सुर को पीड़ित कर पायी थी।

कितनी बाधा पार करीं लड़ भिड़ कर खुशियां लायीं थीं॥

प्रभु कृपा कल्पतरु बन आयी पल में नृप पद को प्राप्त किया।

मुनि ज्ञानी तप में युग बीता पा जो न सके प्रभु राम दिया॥

211

प्रभु की महिमा देखी अपार कपि कुल ने गद-गद ही पाया।

थे दयालु परम दुख भंजक थे सब कुछ पाया जो भी आया॥

गुण अवगुण सबमें होते है भगवान राम के सब अपने।

सर्वज्ञ अजन्मा अनुपम जो भक्ति सदा उनके सपने॥

212

श्री राम भटकता दिल उनका सीता यादों में खोया था।

वानर सेना थी अडिग सदा प्रभु सेवा अंकुर बोया था॥

हनुमान बड़े बलशाली थे हितकारी थे बड़भागी थे।

प्रभु सेवा ही व्रत उनका था खोजी सीता रघु रागी थे॥

213

खोये थे प्रभु झंझावातों में सोचा ये उचित समय आया।

छोड़ा आसन वो खड़े हुए सबको देखा मन हर्षाया॥

तात विभीषण लंकापति सुग्रीव उचित है बतलाये।

है विशाल जलनिधि सागर है हो पार सबल ये जतलायें॥

214

लंकेस उठे सविनय बोले रघुवर प्रियवर खुद ज्ञाता हैं।

सब कारण के खुद ही निदान बंधन न कही कुछ आता है॥

ये प्रेम विधाता ही है प्रभु सेवक देते सम्मान आप।

जगती पालक अधिनायक है क्षमता की असीम है माप॥

215

पूंछा प्रभु ने मैं धन्य हुआ निज सन्मति उर में लेता हूँ।

प्रनतपाल दुख भंजक रघुनायक सहमति निज देता हूँ॥

सागर है देव सदा पूजक ज्ञानी हैं वे विज्ञानी हैं।

बल की आवश्यकता नहीं प्रभु बस विनय यहाँ की जानी है॥

216

सागर कुल गुरु आपके हैं ये पथ मुझको ही भाता है।

जलनिधि सबका हित करते हैं जगती से उनका नाता है॥

आराधना यहां उनकी होगी जलनिधि सहज पालक होंगे।

कपि सेना पार सहज होगी श्री देव स्वयम् चालक होंगे॥

217

श्री राम विभीषण मत भाया बोले हे तात उचित ही है।

कुल गुरु वारिध अपने ही हैं महिमा विधि द्वार रचित ही है॥

पूजा विनय करें आयोजित परम विधाता ही कहता है।

धर्म सनातन का हो पालन दुख बंधन सबके हरता है॥

218

लघु भ्राता लक्ष्मण दुखी हुए प्रभु का मत उनको न भाया।

है समय बहुत है अब परिवर्तित बल पौरूष ही मंजिल पाया॥

कर जोड़ लखन प्रिय भ्रात कहा यों कार्य नहीं पूरा होगा।

है घमंड अब सागर में पिघलेगा न कर यों भोगा॥

219

बच्चा रोता है तब माँ उसको लिपटा दूध पिलाती है।

सिंह खड़ा हो जो मुँह बाये भेड़ न डर खुद ही आती है॥

भइया आलस दुश्मन सबका यों काम नहीं पूरा होता।

कमजोर बना निर्भर सब पर निश्चित जीवन भर ही रोता॥

220

लघु भ्रात लखन के बचन सुने प्रभु राम तनिक यों मुस्काये।

अति प्रेम देख वो गद-गद थे मन ही मन रघुवर हर्षाये॥

बोले भ्राता धीरज रख लो मत लंका पति का ही मानें।

विधि की अनुकंपा हो प्रियवर ये कार्य सफल निश्चित जानें॥

221

प्रभु नें लक्ष्मण को समझाया सागर के तीर स्वयम् आये।

कुश आसन पर बैठे जाकर कर जोड़ विनय कर हर्षाये॥

मन को एकाग्र किया रघु नें दधिपति का खुद ही ध्यान किया।

प्रभु हैं जो स्वयम् जगत स्वामी वंदित हो सबको ज्ञान दिया॥

222

भ्रात विभीषण अपमानित सह चार सचिव लंका छोड़ी।

रावण खुद ही अब शंकित था हो आतुर पथ उसने मोड़ी॥

भेजा दूत परम चेतन था भ्रात विभीषण पीछे आया।

भक्त रूप का चोला ओढ़ा देख कपिल सेना चकराया॥

223

राम भजन करता झूमा था रूप निसाचर से मुख मोड़ा।

चले विभीषण पीछा करता रावण हित राम ओढ़नी ओढ़ा॥

रूप बहुत कुछ लगा दिखावा कपियों को उस पर शक आया।

है अजनवी सभी पहचाने बाँध उसे फिर हड़काया॥

224

मारा और कचोटा मन से कर प्रहार कपिपति पर लाये।

सुग्रीव हुआ क्रोधित बोला दुर्जन को पीड़ा पहुचाये॥

मारो ओर सताओ इतना भूल कभी न वापिस आये।

कपि सेना थी बड़ी लड़ाकू बांध उसे यम नर्क दिखाये॥

225

कपि मिलकर उसे सताते थे रोता चीखा न सुनते थे।

प्रभु राम विजय वो चिल्लाते कपिवर की महिमा गुनते थे॥

लक्ष्मण ने कोलाहल सुनकर पास सभी को बुलवाया।

रोता चीखा गिड़गिड़ा रहा कर दया कैद से छुड़वाया॥

226

खड़ा काँपता आतंकित था दूत बिहस लक्ष्मण फिर बोले।

जान दूत रावण का आया पास बुला सब बंधन खोले॥

संदेश दिया रावण को ये न स्वयम् आग न ज्यादा खेले।

लंका तुमको है यदि प्यारी जननी सीता को न झेले॥

227

रावण ये अटल सत्य जानो प्रभु राम बने यमराज यहाँ।

ये राज पाठ अब अंतिम होगा विधि का यही निदान रहा॥

जननी सीता का पाप अधम कुल का विनाश ही लायेगा।

ये पत्र स्वयम् उनको देना बच न वो ऐसे पायेगा॥

228

रावण को यों पाती भेजी दुश्मन का दूत कुशल छोड़ा।

लक्ष्मण ने जीवन दान दिया मानवता से नाता जोड़ा॥

लघु भ्रात राम का भक्त बना पैरों पर माथा झुका लिया।

गुणगान किया रघुनंदन का लंका पथ स्वयम् प्रयाण किया॥

229

कपि सेना से जीवन दान मिला वापिस लंका पथ पर आये।

चरणों पर झुक माया रगड़ा लंकेस पास खुद को पाये॥

रावण पूछा फिर समाचार क्या दुष्ट विभीषण मिल पाया।

पापी वो नित हतभागी है लंका अनहित करने आया॥

230

सुक दूत बहुत घबराया था कपि सेना बहुत सताया था।

बोला लघु भ्रात लखन रक्षक जीवन को स्वयम् बचाया था॥

हे महाराज सेना विशाल कपिबल लगते अभिनेता हैं।

चिंता न कोई सब मस्ताये लगते सब के सब नेता हैं॥

231

राजन में आप बताता हूँ भ्राता सचमुच बड़भागी है।

राम हृदय से लिपटाया लघु भ्रात तनिक न दागी है॥

सम्मान बहुत दे कर उनको निज साथ शिला पर बैठाया।

भ्राता माना कर राजतिलक लंका पति मुकुट भी पहनाया॥

232

मारा सबने मिलकर मुझको दी श्री राम शपथ फिर बच आये।

पूछा प्रभु कैसे रघुपति मोहक अति दृष्टि न हट पाये॥

बाहु विशाल हैं शक्ति पुंज नव कोमलता ही छायी है।

लघु भ्रात लखन है बल अपार रघु राम भक्ति ही पायी है॥

233

कपि भालु सहित सेना अपार लंकापति हमसे भारी हैं।

सब एक हैं न मत भेद वहां लगता प्रभु रन हम हारी है॥

आज विभीषण भाग्यवान मन से सबको वो प्यारे हैं।

सेना की बागडोर उन पर कमजोर न कुछ बेचारे हैं॥

234

राजन मेरी ये समझ रही रिपु सेना रण न हारी है।

हर कपि विशाल बलशाली हैं प्रभु प्रीति सदा हितकारी है॥

साहस उनका पर्वताकार तिनके भर हमें समझते हैं।

रघु राम तेज से आलोकित प्रभु धुन ही मन-मन जपते हैं॥

235

लंकेश सहज ही मुस्काया सुक बचन न उसको मन भाया।

रे दुष्ट न दे अब सीख मुझे वानर ने तुझको धमकाया॥

दंभी उसकी मति मारी है डरपोक कुलिष मन भ्राता है।

चोटी का नीच निसाचर है वानर मानुस ही भाता है॥

236

रे मूड है तू अति अज्ञानी दुश्मन का दास लगा बनता।

यों पिट कर आया कायर तू लंका का मान हनन करता॥

वानर यों ही जुड़ जाते हैं रघु राम समझता बलशाली।

साधन दरिद्र मति भी मारी केवल वो है बस वाचाली॥

237

रावण का क्रोध बढ़ा देखा लक्ष्मण खत स्वयम् प्रदान किया।

पत्र लखन में दिया कहा बरबस ही जीवन दान दिया॥

लंकेस न अब आपे में था बाम हस्त खत प्राप्त किया।

मंत्री ने पत्र पढ़ा स्वर में खुद राज सभा को ज्ञान दिया॥

238

पत्र सभा में गूंज रहा था सब बेचैनी से सुनते थे।

विष वाण लगे सब क्रोधित थे लंकेस सहित सब भुनते थे॥

रावण को इंगित कर के रघु नें प्रकट चुनौती दी थी।

वाचाल न बन तूं होश में आ मिटने की प्रकट फिरौती दी थी॥

239

तू बहुत घमंडी बनता है शक्ति का भी अभिमान तुझे।

भ्राता रघुवर का दुश्मन है जाना निर्बल नापाक मुझे॥

ब्रहमा महेश विष्णु रक्षक प्रभु राम से बच न पायेगा।

जीवन का कुछ भी मोह तुझे पापी झुक जा बच जायेगा॥

240

रावण है बस मार्ग एक भ्रात विभीषण पथ पर चल।

प्रभु राम शरण तू भी आ जा छोड़े अब खुद ही बल छल॥

विधि बाम विधाता सोच अलग मूरख तू बच न पायेगा।

स्वर्णिम लंका जल जायेगी सब खाक - खाक हो जायेगा॥

241

पत्र सुना रावण मुस्काया राज्य सभा में यों बोला।

लघु भ्रात लखन वाचाल बहुत दंभी ओढ़ा रघु का चोला॥

धरती का है वो शूद्र जीव चाहत है नभ को पकड़ेगा।

पंख नहीं वह शक्तिहीन विधि बाम विधाता जकड़ेगा॥

242

सुक भी अब गुस्से में आया नृप का प्रलाप न मन भाया।

बोला न क्रोध उचित है अब जाना जो वहां समझ पाया॥

रघुवीर राम जग के स्वामी वो कृपा वो सब पर करते हैं।

अपराधी हो चाहे जितना शरणागत दुख सब हरते हैं॥

243

पाप न है अब क्षमा योग्य प्रभु दास बनो बच जाओगे।

लंका सुख चैन सदा होगा भव सागर से तर पाओगे॥

कर जोड़ नाथ विनती करता सीता को प्रभु सहज छोड़ें।

लंका तब ही बच पायेगी काल चक्र फिर से मोड़े॥

244

रावण क्रोध फटा पागल हो चरण प्रहार किया दुतकारा।

रे पापी तू भेदी दुश्मन का जा मुझको दे छुटकारा॥

स्वामी का था सच्चा सेवक सीस नवा कर लंका छोड़ी।

लंकेस भ्रात का पथ लेकर प्रभु राम मिलन को मत मोड़ी॥

245

प्रभु राम पास आकर सुक ने चरणों पर गिर सम्मान दिया।

रावण अपमान किया बतलाया ली विदा तथा प्रस्थान किया॥

यह कथा बतायी ग्रंथो में सुक पूर्व जन्म मुनि ज्ञानी था।

ऋषि अगस्त से शापित था निसिचर था पहले ध्यानी था॥

246

रावण ने उपकार किया निसिचर योगी बन आया था।

लंका का त्यागन सहज किया निज ग्रह उपवन मे पाया था॥

दुष्ट दुष्टता उसको प्यारी सज्जनता हारी लगती है।

विधि की लाठी अति बलशाली पापी गति सदा भटकती है॥

247

सागर से प्रीत करें रघुवर तप ध्यान मनन कर बैठे थे।

भक्त विभीषण मति मानी उपवास किया न लेटे थे॥

वानर सेना थी उक्तायी यो समर न जीता जाता है।

जल निधि न कोई हलचल थी न मार्ग समझ में आता है॥

248

बीते दिन तीन अडिग सागर यह विनय रास न आयी थी।

धीरज टूटा श्री राम उठे भय बिन न विनय कुछ भायी थी॥

भ्राता का क्रोध लखन हर्षित हे तात यही मति मेरी थी।

है विशाल न सोच बड़ी दंडित हो अब न देरी थी॥

249

चेहरा रघुवर का लाल हुआ क्रोधित लक्ष्मण से धनुष लिया।

बोले भ्राता तुम ज्ञानी हो सठ दंडित का मत सही दिया॥

सागर का जल अब सूखेगा ये अग्नि वाण मैने साधा।

रे दुष्ट न है अब लाज तुझे ले चख फल न कोई बाधा॥

250

लक्ष्मण के मन की बात हुई जोश उन्हें डट कर आया।

करतल ध्वनि कर हुँकार भरी प्रभु राम स्वयम् मन को भाया॥

प्रभु ने सोचा न विलंब किया जलनिधि छाती पर वार किया।

दावानल फूंटी बारिध में जलचर चीखे व्यवधान दिया॥

251

मगर सांप मछली बिच्छु आतुर सब बस बिलखाते थे।

थी उलट-पटल चिल्लाते थे विपदा अब झेल न पाते थे॥

सागर पति ने देखा विनाश होश तुरत उनको आया।

रूप ब्राह्मण प्रकट हुए माणिक मोती. प्रभु को लाया॥

252

रघु चरण पकड़ सागर बोला अपराधी आप क्षमा कर दें।

जड़ हूं मेरी मति मारी थी दें अभय दान संकट हरलें॥

अज्ञानी हूँ अपराधी हूँ ये दंड स्वयम् मैं भागी हूँ।

मर्यादा में पगलाया था स्वामी में बस हतभागी हूँ॥

253

प्रभु की आज्ञा है बस अकाट्य जगती यह महिमा गायेगी।

जलहीन बनूं यह संभव है सेना लंका पथ जायेगी॥

विधि नें मुझको मर्यादा दी प्रभु उसका पालन करने दें।

आज्ञा है प्रभु की शिरोधार्य संकट का कारण हरने दें॥

254

जल निधि स्वामी की विनय सुनी प्रभु राम सहज ही मुस्काये।

बोले प्रियवर कुछ ऐसा हो सेना उस पार पहुँच जाये॥

सागर राजा ने बतलाया नल नील कटक में भाई हैं।

ऋषि ने उनको वरदान दिया यह कला अहम ही पायी हैं॥

255

स्पर्श किये जो शिला खंड जल में डाले उतरायेंगे।

चमत्कार होगा प्रभु यह सागर पर मार्ग बनायेंगे॥

वानर बलिष्ट सब भालू हैं पत्थर जल्दी ही आयेंगे।

हैं सब पटु भी उत्साही हैं पार पहुंच सब जायेंगे॥

256

मैं भी इसमें भागी हुंगा सहयोग सदा मेरा होगा।

मर्यादा भी रह जायेगी आपदा सवेरा भो होगा॥

हे नाथ विनय मेरी सुनलें रक्षक हैं तात बचालें अब।

प्रभु आप सकल जग स्वामी हो उपकार दया न जाने कब॥

257

प्रभु बाण बड़ा ही घातक है जल निधि खुद बच न पायेगा।

मैं मालिक प्रभु नत मस्तक हूँ ये दास सदा गुण गायेगा॥

दुष्ट बहुत पीड़ित करते उत्तर तट तट पर उत्पाती हैं।

उनको दें दंड न्याय कर्ता सुख शांति यहां की जाती है॥

258

श्री राम सरल हितकारी हैं सागर का मत मन को भाया।

संघाती तीर लिया वापिस उत्तर तट उसको बरसाया॥

वे दुष्ट तनिक न बच पाये सज्जन ने सुख हित ही माना।

प्रभु रक्षक दीन दुखित सबके सागर प्रताप मन से जाना॥

259

प्रभु बल पौरूष से मोहित था सागर ने अब मन से जाना।

रघुबर की लीला गाता था दर्शन कर हित अपना माना॥

श्री राम सदा हितकारी हैं महिमा उनकी होती अपार।

पापी कामी सब तर जाते करते मन मे उनका प्रचार॥

अंत में
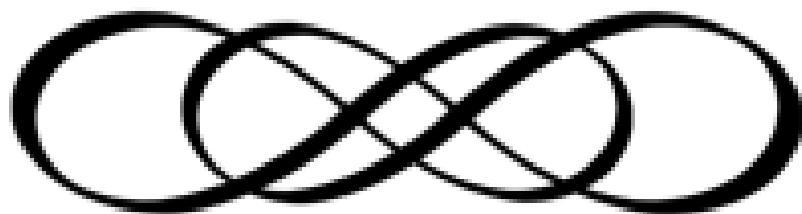
260

राम कथा हित कारी है भागीरथ गंगा दुख हरनी।

हनुमत सेवक अति भाग्यवान प्रभु सेवा ही उनकी करनी॥

यह स्वामी सेवक का नाता अविरल है बहुत अनूठा है।

जीवन का सत है निहित यहाँ कलियुग ने सबको लूटा है॥

261

कलियुग पापों की घाटी है यह कथा सदा सुखदायी है।

भौतिकता में सोया खोया दे ध्यान समझ ना पायी है॥

बंधन जब-जब दुखदायी हों जीवन से ममता घट जाये।

अनुरोध साथ ये पाठ करें नैतिक बल शांति स्वयम् आये॥